ISSN : 3048-6203 Volume -2| Issue -2| July - Dec 2025

शोध भूमि

शिक्षा एवं शिक्षण शास्त्र विषय की पूर्व समीक्षित शोध पत्रिका

Page No. : 240-252

1990 से 2005 के मध्य भारत–नेपाल संबंधों में लोकतंत्र, माओवादी आंदोलन और सीमा विवादों की भूमिका : एक बहुआयामी विश्लेषण

बृजेश कुमार मौर्य
एम.ए., (राजनीतिशास्त्र)
जी.एस.एस. पी.जी. कॉलेज, कोयलसा, आजमगढ़, उत्तर प्रदेश
E-mail : mailmeindia563@gmail-com
डॉ० दिनेश कुमार सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर,
राजनीतिशास्त्र विभाग,
जी.एस.एस. पी.जी. कॉलेज, कोयलसा, आजमगढ़, उत्तर प्रदेश

सारांश

प्रस्तुत शोधपत्र 1990 से 2005 की अवधि में भारत–नेपाल संबंधों की जटिलताओं और बहुआयामी विकास का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। इस कालखंड में नेपाल में लोकतांत्रिक परिवर्तन, माओवादी आंदोलन का उदय, और सीमा विवाद जैसे घटनाक्रमों ने दोनों देशों के बीच के द्विपक्षीय संबंधों को गहराई से प्रभावित किया। शोध में यह विश्लेषण किया गया है कि किस प्रकार भारत ने नेपाल के लोकतांत्रिक संघर्षों में सहायक भूमिका निभाई तथा माओवादी विद्रोह के दौरान सुरक्षा संतुलन बनाए रखने के लिए रणनीतिक नीति अपनाई। साथ ही, कालापानी, सुस्ता एवं लिपुलेख जैसे सीमा विवादों को लेकर दोनों देशों के बीच कूटनीतिक प्रयास और सीमांकन संवादों की प्रक्रिया का भी अध्ययन किया गया है। यह शोध भारत–नेपाल संबंधों के व्यापार, शिक्षा, स्वास्थ्य, सांस्कृतिक आदान–प्रदान और बहुपक्षीय मंचों पर सहयोग जैसे पहलुओं का समेकित मूल्यांकन करता है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि यद्यपि इस कालखंड में संबंधों में कई तनाव और मतभेद उत्पन्न

हुए, तथापि ऐतिहासिक, सामाजिक और भौगोलिक निकटता ने द्विपक्षीय सहयोग को कायम रखा। यह शोध भारत–नेपाल संबंधों की परस्पर निर्भरता, रणनीतिक साझेदारी और भविष्य की संभावनाओं को समझने की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है।

बीज शब्द :– भारत–नेपाल संबंध, लोकतंत्र, माओवादी आंदोलन, सीमा विवाद

प्रस्तावना

भारत और नेपाल के संबंध ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, सामाजिक और भौगोलिक गहराई में रचे–बसे हैं। इन दोनों देशों के मध्य न केवल हिमालय की तलहटी साझा होती है, बल्कि भावनात्मक और सभ्यतागत आधार भी लगभग समरूप हैं। सदियों से इन देशों के नागरिकों के बीच आवाजाही निर्बाध रही है, और दोनों ओर की जनता में एक सहज अपनापन और सांस्कृतिक मैत्री देखने को मिलती है। नेपाल को हिन्दू राष्ट्र के रूप में भारत के साथ विशेष आध्यात्मिक संबंध प्राप्त है। पशुपतिनाथ से लेकर जनकपुर और लुम्बिनी तक की धार्मिक भूमि भारतवासियों के लिए वैसी ही श्रद्धा का विषय रही है, जैसे भारत में अयोध्या, काशी और मथुरा नेपालियों के लिए। राजनीतिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो 1950 की भारत–नेपाल मैत्री संधि ने द्विपक्षीय संबंधों को संस्थागत स्वरूप प्रदान किया था, जिसके तहत दोनों देशों ने पारस्परिकता, सुरक्षा सहयोग और व्यापारिक सहकारिता की नींव रखी।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत ने लोकतंत्र का मार्ग अपनाया, वहीं नेपाल ने लंबे समय तक राजशाही शासन का पालन किया। यद्यपि दोनों देशों के शासन तंत्र में भिन्नता रही, फिर भी 20वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में नेपाल में लोकतांत्रिक आकांक्षाएँ प्रबल होती गईं। इस पृष्ठभूमि में 1990 का दशक भारत–नेपाल संबंधों के लिए अत्यंत निर्णायक सिद्ध हुआ। वर्ष 1990 में नेपाल में 'जनआंदोलन' के माध्यम से संवैधानिक राजतंत्र की स्थापना हुई, और एक बहुदलीय लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था का सूत्रपात हुआ। यह बदलाव केवल नेपाल की आंतरिक राजनीति का परिणाम नहीं था, बल्कि क्षेत्रीय और वैश्विक परिवर्तनों से भी प्रेरित था। इस परिवर्तन को भारत ने उत्साहपूर्वक समर्थन दिया, क्योंकि भारत सदैव नेपाल में लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं का पक्षधर रहा है। नेपाल के लोकतंत्रीकरण से भारत–नेपाल संबंधों में एक नई ऊर्जा आई, लेकिन यह ऊर्जा लंबे समय तक स्थिर नहीं रह सकी क्योंकि 1996 में नेपाल में माओवादी आंदोलन की शुरुआत ने देश को पुनः अस्थिरता की ओर धकेल दिया।

1996 में नेपाल में माओवादी पार्टी (CPN-Maoist) द्वारा सशस्त्र विद्रोह आरंभ हुआ, जिसका उद्देश्य राजशाही को समाप्त कर एक गणराज्य की स्थापना करना था। यह आंदोलन केवल नेपाल की शासन प्रणाली के विरुद्ध ही नहीं था, बल्कि यह देश की सामाजिक संरचना, आर्थिक विषमता और क्षेत्रीय असंतुलनों के विरुद्ध भी विद्रोह था। इस आंतरिक संघर्ष ने नेपाल की राजनीतिक स्थिति को गहराई से प्रभावित किया और साथ ही भारत की कूटनीतिक नीति को भी चुनौती दी। भारत को एक ओर नेपाल में लोकतंत्र के समर्थन में खड़ा होना था, तो दूसरी ओर माओवादी उग्रवाद की संभावित श्रेचपसस–वअमत मम्मिबजश से अपनी सीमा की सुरक्षा भी सुनिश्चित करनी थी। इस अवधि में भारत की नीति संतुलनकारी रहीकृएक ओर लोकतंत्र समर्थक दृष्टिकोण और दूसरी ओर सुरक्षा प्राथमिकताओं का समायोजन। भारत के लिए यह संतुलन बनाना कठिन था, क्योंकि नेपाल में अस्थिरता का प्रत्यक्ष प्रभाव भारत के सीमावर्ती राज्यों (विशेषकर बिहार, उत्तर प्रदेश और सिक्किम) पर पड़ता था।

इस अवधि में भारत–नेपाल सीमा विवाद भी एक प्रमुख विषय बना रहा। ऐतिहासिक कारणों और अस्पष्ट सीमांकन के चलते कालापानी, सुस्ता, लिपुलेख जैसे क्षेत्र विवाद के केंद्र में रहे। विशेषकर कालापानी विवाद ने 1990 के दशक के उत्तरार्ध में कूटनीतिक संबंधों में तनाव उत्पन्न किया। भारत द्वारा क्षेत्र में सैन्य उपस्थिति बनाए रखने को लेकर नेपाल में विरोध की आवाजें उठीं। वहीं, नेपाल में बढ़ती माओवादी अस्थिरता और भारत की सुरक्षा चिंता ने भी इस सीमा विवाद को और अधिक संवेदनशील बना दिया। यद्यपि दोनों देशों ने इस विषय को शांतिपूर्वक हल करने के प्रयास किएकृसीमा आयोगों की बैठकें, द्विपक्षीय वार्ताएं, और संयुक्त मानचित्रण की परियोजनाएँकृफिर भी विवाद पूरी तरह समाप्त नहीं हो सका। इन परिस्थितियों में भारत–नेपाल संबंध केवल मैत्री या भौगोलिक निकटता तक सीमित नहीं रह गए, बल्कि अब यह एक व्यापक रणनीतिक, सुरक्षा, और कूटनीतिक विमर्श का हिस्सा बन गए।

शोध की दृष्टि से यह कालखण्ड (1990 से 2005) एक बहुस्तरीय विश्लेषण की माँग करता है। एक ओर यह समय लोकतंत्र की स्थापना और उसकी स्थिरता की परीक्षा का है, दूसरी ओर यह माओवादी हिंसा और उग्रवाद के चरम का काल है। साथ ही, इसी अवधि में भारत और नेपाल के बीच व्यापारिक, सांस्कृतिक, सुरक्षा और कूटनीतिक संबंधों में कई उतार–चढ़ाव आए। इस कालावधि को केवल एकतरफा राजनीतिक दृष्टिकोण से देखना शोध की पूर्णता में बाधक होगा। इसलिए यह शोध न केवल राजनीतिक परिवर्तनों को केंद्र में रखेगा, बल्कि सामाजिक आंदोलनों, सुरक्षा रणनीतियों और कूटनीतिक संवादों की भी समीक्षा करेगा। भारत की नेपाल नीति इस

दौरान कैसे रूपांतरित हुई? माओवादी आंदोलन ने भारत की कूटनीति पर क्या प्रभाव डाला? सीमा विवादों को सुलझाने में कौन–कौन से कारक प्रभावी रहे? इन सभी प्रश्नों का गहन अध्ययन इस शोध का उद्देश्य है।

नेपाल में लोकतांत्रिक परिवर्तन और भारत की भूमिका

1990 में नेपाल में जनआंदोलन के माध्यम से संवैधानिक राजतंत्र और बहुदलीय लोकतंत्र की स्थापना हुई, जिसने देश की राजनीतिक दिशा को बदला। इस परिवर्तन में भारत ने महत्वपूर्ण कूटनीतिक भूमिका निभाई, जहां उसने लोकतंत्र समर्थक नीति अपनाते हुए नेपाल की जनता की आकांक्षाओं को समर्थन दिया। भारत ने लोकतांत्रिक संस्थाओं को सशक्त करने हेतु तकनीकी और आर्थिक सहयोग प्रदान किया। नेपाल में लोकतंत्र की बहाली ने भारत–नेपाल संबंधों को एक नई पारदर्शिता और विश्वास की दिशा में अग्रसर किया, जिससे दोनों देशों के बीच राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक स्तर पर सहयोग मजबूत हुआ।

1990 का जनआंदोलन और नया संविधान

वर्ष 1990 का जनआंदोलन नेपाल के राजनीतिक इतिहास में एक निर्णायक मोड़ के रूप में उभरा, जब लंबे समय से चली आ रही निरंकुश राजशाही के विरुद्ध जनता का असंतोष सड़कों पर उतर आया और लोकतांत्रिक अधिकारों की पुनर्स्थापना की माँग ने संगठित रूप ले लिया। नेपाली कांग्रेस और वामपंथी दलों के नेतृत्व में इस व्यापक जनांदोलन ने राजा बीरेन्द्र को संवैधानिक राजतंत्र की स्थापना स्वीकारने के लिए बाध्य कर दिया। इसके परिणामस्वरूप नवंबर 1990 में नेपाल का नया संविधान लागू हुआ, जिसमें बहुदलीय प्रणाली, संवैधानिक राजतंत्र और नागरिकों को मौलिक अधिकारों की गारंटी दी गई। यह संविधान केवल एक राजनीतिक दस्तावेज नहीं था, बल्कि नेपाल के लिए एक नई राजनीतिक दिशा का मार्गदर्शक बन गया, जिसने देश को लोकतांत्रिक शासन की ओर अग्रसर किया।

नेपाल में लोकतंत्र की बहाली : घटनाक्रम और प्रभाव

नए संविधान के लागू होते ही नेपाल में लोकतंत्र की बहाली के साथ एक नई राजनीतिक यात्रा शुरू हुई, जिसमें राजनीतिक दलों को स्वतंत्र रूप से कार्य करने की अनुमति मिली और पहली बार बहुदलीय संसदीय चुनावों का आयोजन हुआ। हालांकि, इस प्रक्रिया में कई बाधाएँ भी थीं, जैसे गठबंधन सरकारों की अस्थिरता, प्रशासनिक अराजकता और जन अपेक्षाओं के साथ न्याय करने में सरकारों की विफलता।

लोकतंत्र की बहाली ने समाज में राजनीतिक चेतना को तो जाग्रत किया, परंतु जमीनी स्तर पर आर्थिक असमानता, सामाजिक विषमता और सत्ता के केंद्रीकरण जैसे मुद्दे बने रहे, जिससे आम जनता में निराशा बढ़ी और यही कारण रहा कि 1996 में माओवादी विद्रोह का उदय हुआ, जिसने लोकतंत्र के ढांचे को चुनौती दी और नेपाल को एक बार फिर अस्थिरता की ओर धकेल दिया।

लोकतंत्र के समर्थन में भारत की कूटनीतिक नीति

भारत ने नेपाल में लोकतांत्रिक परिवर्तन का स्वागत किया और उसके समर्थन में सक्रिय भूमिका निभाई, हालाँकि उसने प्रत्यक्ष हस्तक्षेप से परहेज करते हुए नैतिक, वैचारिक और राजनयिक सहयोग को प्राथमिकता दी। भारत की नेपाल नीति का उद्देश्य थाकृनेपाल की लोकतांत्रिक संस्थाओं को मजबूत करना, राजनीतिक स्थिरता को प्रोत्साहित करना और उग्रवाद से निपटने में सहयोग देना। भारत ने नेपाल के प्रमुख राजनीतिक दलों के साथ निरंतर संवाद बनाए रखा, संसदीय प्रशिक्षण, निर्वाचन प्रक्रिया की जानकारी और संस्थागत सहयोग के माध्यम से नेपाल के लोकतांत्रिक आधार को सुदृढ़ करने की दिशा में कार्य किया। इसके अतिरिक्त, भारत ने यह सुनिश्चित करने की कोशिश की कि नेपाल में लोकतंत्र का मार्ग अवरुद्ध न हो और शांति स्थापना की दिशा में नेपाल सरकार को आवश्यक सहायता उपलब्ध हो।

लोकतंत्र और द्विपक्षीय विश्वास निर्माण

नेपाल में लोकतंत्र की बहाली के बाद भारत और नेपाल के संबंधों में एक नए विश्वास और परस्पर सहयोग का दौर आरंभ हुआ, जिसमें दोनों देशों के बीच कूटनीतिक संवाद अधिक पारदर्शी, सहज और स्थिर हुआ। भारत ने नेपाल की लोकतांत्रिक संस्थाओं को सशक्त करने के लिए विकास सहायता, तकनीकी प्रशिक्षण, और द्विपक्षीय वार्ताओं के माध्यम से समर्थन दिया, जिससे दोनों देशों के बीच सहयोग की भावना प्रबल हुई। सीमा सुरक्षा, जल संसाधन प्रबंधन, व्यापार और सांस्कृतिक विनिमय जैसे विषयों पर नियमित वार्ताएँ आयोजित की गईं, जिसने द्विपक्षीय संबंधों को गहराई प्रदान की और यह स्पष्ट किया कि भारत नेपाल की लोकतांत्रिक यात्रा का केवल दर्शक नहीं, बल्कि सहयात्री भी है।

माओवादी आंदोलन का उदय और भारत की रणनीति

वर्ष 1996 में नेपाल में माओवादी आंदोलन का उदय गहरी सामाजिक–आर्थिक असमानताओं और राजनीतिक उपेक्षा के विरोध में हुआ, जिसने जल्द ही एक सशस्त्र

संघर्ष का रूप ले लिया। इस आंदोलन ने नेपाल की आंतरिक स्थिरता को चुनौती दी और भारत के लिए भी सुरक्षा चिंताओं को जन्म दिया, विशेषकर सीमावर्ती क्षेत्रों में नक्सल प्रभाव को देखते हुए। भारत ने एक संतुलित रणनीति अपनाते हुए नेपाल सरकार को कूटनीतिक और तकनीकी समर्थन दिया, साथ ही माओवादियों को मुख्यधारा में लाने के लिए संवाद की प्रक्रिया को भी प्रोत्साहित किया। इस आंदोलन ने भारत–नेपाल संबंधों को अस्थिर किया, परंतु अंततः भारत की सक्रिय भूमिका से शांति प्रक्रिया को गति मिली।

माओवादी आंदोलन की उत्पत्ति और उद्देश्य (1996)

नेपाल में माओवादी आंदोलन की शुरुआत 1996 में हुई, जब नेपाल कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) ने सशस्त्र संघर्ष की घोषणा करते हुए नेपाल की शासन व्यवस्था को समूल परिवर्तन की चुनौती दी। यह आंदोलन समाज में व्याप्त गहरी आर्थिक विषमता, जातीय भेदभाव, दलितों और जनजातीय समुदायों की उपेक्षा तथा ग्रामीण क्षेत्रों में विकास की कमी जैसी समस्याओं से उत्पन्न हुआ था। आंदोलन का मुख्य उद्देश्य थाकृराजशाही का पूर्ण उन्मूलन कर गणतंत्र की स्थापना, नई संविधान सभा का गठन, सामाजिक न्याय की स्थापना और सशस्त्र विद्रोह के माध्यम से जनवाद की स्थापना। माओवादियों ने इसे श्जनयुद्धश का नाम दिया और गोरखा, रोल्पा, रुकुम जैसे पहाड़ी क्षेत्रों से आरंभ कर धीरे–धीरे पूरे नेपाल में अपनी पकड़ बना ली। राजनीतिक प्रणाली में सुधार की मांग को लेकर शुरू हुआ यह आंदोलन शीघ्र ही एक सशस्त्र विद्रोह में तब्दील हो गया, जिसने नेपाल की राजनीतिक स्थिरता और सुरक्षा ढांचे को गहरा आघात पहुँचाया।

नेपाल की आंतरिक राजनीति में अस्थिरता

माओवादी आंदोलन के प्रभाव से नेपाल की आंतरिक राजनीति अत्यंत अस्थिर हो गई, जहाँ एक ओर निर्वाचित सरकारें बार–बार बदलती रहीं, वहीं दूसरी ओर राज्य सत्ता और विद्रोही समूहों के बीच निरंतर टकराव बना रहा। सरकारें आंदोलन से निपटने में स्पष्ट रणनीति नहीं अपना सकीं, जिससे राजनीतिक नेतृत्व की कमजोरी उजागर हुई। सेना और पुलिस की कार्रवाई कई बार मानवाधिकार उल्लंघन का कारण बनी, जिससे जनता का विश्वास शासन में कम होता गया। एक ओर संसद और राजा के बीच सत्ता का संघर्ष था, तो दूसरी ओर माओवादी आंदोलन राज्यसत्ता को चुनौती दे रहा था। इस द्वंद्व की स्थिति में नेपाल की संवैधानिक संस्थाएँ कमजोर पड़ीं, और प्रशासनिक ढांचा चरमराने लगा। राजनीतिक दलों के आपसी मतभेद और

सत्ता–साझेदारी की विफलता ने माओवादियों के एजेंडे को और अधिक वैधता प्रदान की, जिससे पूरे राष्ट्र में अस्थिरता की भावना गहराने लगी।

भारत की सुरक्षा चिंताएँ और रणनीतिक प्रतिक्रियाएँ

नेपाल में माओवादी विद्रोह के उभार ने भारत के लिए भी गंभीर सुरक्षा चिंताएँ उत्पन्न कीं, विशेष रूप से इसलिए क्योंकि भारतीय राज्य जैसे बिहार, उत्तर प्रदेश और झारखंड पहले से ही नक्सलवाद की समस्या से जूझ रहे थे और नेपाल की सीमा खुली होने के कारण यह आंदोलन भारतीय क्षेत्रों में फैलने का खतरा उत्पन्न कर रहा था। भारत ने प्रारंभ में नेपाल सरकार को राजनीतिक समर्थन और खुफिया सहयोग प्रदान किया, लेकिन साथ ही यह भी स्पष्ट किया कि समस्या का समाधान सैन्य नहीं बल्कि राजनीतिक संवाद से ही संभव होगा। भारत ने माओवादियों के नेताओं को अपनी भूमि पर गतिविधियाँ चलाने से रोकने हेतु सतर्कता बढ़ाई और सीमा सुरक्षा बलों की तैनाती को सुदृढ़ किया। भारत ने नेपाल को हथियार, प्रशिक्षण और संसाधन भी उपलब्ध कराए ताकि उसकी सुरक्षा संस्थाएँ सशक्त हो सकें। साथ ही, भारत की विदेश नीति में यह प्राथमिकता रही कि नेपाल की संप्रभुता और लोकतांत्रिक प्रक्रिया बनी रहे, और किसी भी प्रकार की बाहरी दखलंदाजी से बचा जाए। भारत की यह रणनीतिक संतुलन नीति इस आंदोलन के दौरान उसके व्यापक राष्ट्रीय हितों से जुड़ी रही।

माओवादी आंदोलन का द्विपक्षीय संबंधों पर प्रभाव

माओवादी आंदोलन का भारत–नेपाल संबंधों पर व्यापक प्रभाव पड़ा, जिससे दोनों देशों के बीच संवाद, सहयोग और आपसी विश्वास की प्रक्रिया बाधित हुई। भारत के प्रति माओवादियों का दृष्टिकोण संशयात्मक था और वे भारत को नेपाल की घरेलू राजनीति में हस्तक्षेपकारी शक्ति मानते थे, वहीं नेपाल सरकार द्वारा भारत से प्राप्त सैन्य सहयोग को माओवादियों ने नकारात्मक रूप से प्रचारित किया। भारत की चिंता थी कि यदि नेपाल में माओवादी शासन की स्थापना होती है, तो यह भारत के आंतरिक सुरक्षा ढांचे के लिए खतरा बन सकता है। इस तनावपूर्ण पृष्ठभूमि में भारत–नेपाल संबंधों में अस्थिरता और तनाव के तत्व उभरे। नेपाल में भारत विरोधी भावनाएँ भी उभरने लगीं, जिसे माओवादी प्रचार ने और बल दिया। हालांकि, भारत ने कूटनीतिक स्तर पर संवाद बनाए रखा और अंततः 2005 के आसपास भारत, संयुक्त राष्ट्र और नेपाली राजनीतिक दलों के साझा प्रयास से माओवादियों को मुख्यधारा की

राजनीति में लाने की पहल शुरू हुई, जिससे संबंधों में फिर से संतुलन की संभावनाएँ बनीं।

भारत–नेपाल सीमा विवादरू कारण, स्वरूप और समाधान

भारत–नेपाल सीमा विवाद मुख्यतः कालापानी, लिपुलेख और सुस्ता जैसे क्षेत्रों को लेकर है, जहाँ ऐतिहासिक संधियों की व्याख्या में भिन्नता और भौगोलिक परिवर्तनों ने विवाद को जन्म दिया। इन विवादों ने सीमावर्ती नागरिकों की सामाजिक–आर्थिक समस्याओं को बढ़ाया और दोनों देशों के बीच अविश्वास को जन्म दिया। 1990 से 2005 के मध्य भारत और नेपाल ने संयुक्त सीमा आयोग और कूटनीतिक वार्ताओं के माध्यम से इन विवादों को सुलझाने के प्रयास किए। हालाँकि कोई अंतिम समाधान नहीं निकल सका, फिर भी दोनों पक्षों ने शांतिपूर्ण संवाद बनाए रखते हुए विवाद प्रबंधन की दिशा में महत्वपूर्ण पहल की।

कालापानी, सुस्ता और सीमांकन विवाद

भारत–नेपाल सीमा विवाद का सबसे प्रमुख और पुराना पक्ष कालापानी, लिपुलेख और सुस्ता क्षेत्र से जुड़ा हुआ है, जहाँ ऐतिहासिक संधियों की व्याख्या और भौगोलिक साक्ष्यों को लेकर दोनों देशों के बीच मतभेद बने हुए हैं। 1816 की सुगौली संधि के अनुसार काली नदी भारत और नेपाल के बीच सीमा रेखा मानी गई थी, किंतु काली नदी की वास्तविक धारा को लेकर विभिन्न दावों ने कालापानी को विवादित क्षेत्र बना दिया। इसी तरह सुस्ता क्षेत्र में गंडक नदी की धारा में बदलाव के कारण नेपाल की ओर भूमि कटाव हुआ, जिससे यह क्षेत्र भारत के भीतर आ गया और नेपाल ने इस पर अपना दावा प्रस्तुत किया। इन सीमांकन विवादों ने स्थानीय नागरिकों के जीवन पर प्रभाव डाला और दोनों देशों के बीच सीमावर्ती क्षेत्रों में अविश्वास की स्थिति उत्पन्न की, जो समय–समय पर राजनीतिक तनाव का कारण भी बनी।

सीमा आयोग और कूटनीतिक बातचीत

सीमा विवादों के समाधान हेतु भारत और नेपाल ने संयुक्त रूप से सीमा आयोग का गठन किया, जिसका उद्देश्य थाकृसीमा स्तंभों की पहचान, सीमांकन की पुनः पुष्टि और विवादित क्षेत्रों की संयुक्त जांच। 1981 से लेकर 2005 तक सीमा आयोग की कई बैठकें हुईं, जिनमें तकनीकी विशेषज्ञों, सर्वेक्षण अधिकारियों और कूटनीतिज्ञों ने भाग लिया। इन बैठकों के माध्यम से कई विवादों को सुलझाया गया, किंतु कालापानी और सुस्ता जैसे संवेदनशील मुद्दों पर कोई अंतिम समझौता नहीं हो सका। भारत ने

रेखांकित किया कि वह द्विपक्षीय वार्ता के माध्यम से शांतिपूर्ण समाधान का पक्षधर है, जबकि नेपाल में विभिन्न राजनीतिक दलों और नागरिक संगठनों ने इन मुद्दों को राष्ट्रीय अस्मिता से जोड़ते हुए अधिक कठोर रुख अपनाया। कूटनीतिक वार्ताओं की यह प्रक्रिया यद्यपि धीरे–धीरे आगे बढ़ी, परंतु इसने दोनों देशों को खुले संघर्ष से बचाए रखा और संवाद के द्वार खुले बनाए रखे।

सीमाई क्षेत्र में नागरिक समस्याएँ और मधेशी मुद्दा

सीमा विवादों के बीच सीमाई क्षेत्रों में रहने वाले नागरिकों को अनेक प्रकार की सामाजिक, आर्थिक और सुरक्षा संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ा, जिनमें भूमि विवाद, पहचान की अस्पष्टता, पारगमन बाधाएँ, और प्रशासनिक उलझनें प्रमुख थीं। विशेष रूप से मधेशी समुदाय, जो नेपाल के तराई क्षेत्र में निवास करता है और सांस्कृतिक रूप से भारत के उत्तर प्रदेश और बिहार के लोगों से जुड़ा है, बार–बार उपेक्षा और भेदभाव का शिकार हुआ। भारत–नेपाल संबंधों में मधेशी मुद्दा एक संवेदनशील आयाम बन गया, जहाँ नेपाल सरकार पर आंतरिक भेदभाव के आरोप लगे और भारत पर मधेशियों का समर्थन कर हस्तक्षेप करने का आरोप लगाया गया। यह मुद्दा केवल सीमा विवाद का नागरिक पक्ष नहीं था, बल्कि एक जातीयदृराजनीतिक विमर्श भी बन गया, जिसने भारत–नेपाल संबंधों को और जटिल बना दिया तथा दोनों देशों के नीति–निर्माताओं को अत्यंत सतर्कता और संतुलन के साथ व्यवहार करने के लिए विवश किया।

सीमा विवादों के समाधान की प्रक्रिया (1990–2005)

1990 से 2005 के मध्य भारत और नेपाल के बीच सीमा विवादों को सुलझाने की जो प्रक्रिया विकसित हुई, वह राजनयिक संवाद, तकनीकी सर्वेक्षण, और द्विपक्षीय समझौतों के माध्यम से संचालित हुई। इस दौरान यद्यपि कोई बड़ा राजनीतिक समाधान नहीं निकल सका, फिर भी दोनों पक्षों ने विवादों को प्रबंधित करने की समझदारी दिखाई और संघर्ष टालने का प्रयास किया। सीमा आयोग की निरंतर बैठकों, संयुक्त निरीक्षणों, और राजनीतिक नेतृत्व की प्रतिबद्धता ने सीमा विवादों को नियंत्रण में बनाए रखा। भारत ने इस अवधि में यह संकेत दिया कि वह नेपाल की क्षेत्रीय संप्रभुता का सम्मान करता है, परंतु ऐतिहासिक साक्ष्यों और व्यावहारिक आवश्यकताओं को भी ध्यान में रखना आवश्यक है। वहीं नेपाल ने इन विवादों को संसद, मीडिया और जनचेतना के माध्यम से निरंतर उभार कर द्विपक्षीय संवाद को सक्रिय बनाए रखा। यह अवधि इसलिए महत्त्वपूर्ण रही क्योंकि इसमें सीमा विवादों का शांतिपूर्ण समाधान

तलाशने की बुनियाद रखी गई, जिसने आगे चलकर संवाद की संस्कृति को मजबूत किया।

भारत–नेपाल द्विपक्षीय संबंधों का बहुआयामी मूल्यांकन

भारत–नेपाल संबंधों का स्वरूप बहुआयामी रहा है, जिसमें व्यापार, संस्कृति, शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा और कूटनीति जैसे अनेक क्षेत्र शामिल हैं। 1990 से 2005 के बीच इन संबंधों में गति और जटिलता दोनों देखी गई। भारत नेपाल का प्रमुख व्यापारिक साझेदार रहा और दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक और सामाजिक जुड़ाव ने जनस्तर पर मजबूत संपर्क बनाए रखा। साथ ही, सुरक्षा और क्षेत्रीय कूटनीति के मोर्चे पर सहयोग और चुनौतियाँ समान रूप से बनी रहीं। बहुपक्षीय मंचों पर साझा भागीदारी ने द्विपक्षीय रिश्तों को व्यापक आयाम दिया, यद्यपि कुछ संवेदनशील मुद्दों ने समय–समय पर मतभेद भी उत्पन्न किए। फिर भी, यह संबंध परस्पर निर्भरता, ऐतिहासिक विरासत और क्षेत्रीय स्थिरता के साझा लक्ष्यों पर आधारित रहा।

व्यापार और आर्थिक सहयोग

भारत और नेपाल के बीच व्यापारिक संबंध ऐतिहासिक रूप से मजबूत रहे हैं, जहाँ भारत नेपाल का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार और निवेश स्रोत बना रहा है। 1990 से 2005 की अवधि में आर्थिक सहयोग और व्यापारिक गतिविधियों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई, विशेष रूप से पेट्रोलियम उत्पादों, खाद्यान्न, औद्योगिक वस्तुओं और विद्युत आपूर्ति के क्षेत्रों में। भारत ने नेपाल में अवसंरचना विकास, पनबिजली परियोजनाओं, और सड़क निर्माण के माध्यम से आर्थिक सहायता प्रदान की। नेपाल की निर्भरता भारतीय बंदरगाहों पर बनी रही, जिससे भारत की रणनीतिक भूमिका और बढ़ गई। द्विपक्षीय व्यापार संधियों, कर–मुक्त निर्यात व्यवस्था और सीमाई व्यापार को बढ़ावा देने वाली योजनाओं ने आर्थिक सहयोग को नई दिशा दी, यद्यपि व्यापार संतुलन भारत के पक्ष में झुका रहा, जिससे नेपाल मां असंतोष की भावना भी समय–समय पर उभरी।

शिक्षा, स्वास्थ्य और सांस्कृतिक आदान–प्रदान

भारत और नेपाल के बीच सामाजिक क्षेत्र में शिक्षा, स्वास्थ्य और सांस्कृतिक आदान–प्रदान का संबंध अत्यंत सघन रहा है। भारत सरकार ने इस अवधि में नेपाल के छात्रों को छात्रवृत्तियाँ प्रदान कीं, मेडिकल और इंजीनियरिंग जैसे पेशेवर क्षेत्रों में दाखिले की सुविधा दी, और कई स्कूल–कॉलेजों के निर्माण में सहयोग किया। स्वास्थ्य के क्षेत्र में भारत ने नेपाल में अस्पतालों, औषधालयों, और मोबाइल चिकित्सा

इकाइयों की स्थापना कर जनसेवा को विस्तार दिया। सांस्कृतिक दृष्टिकोण से दोनों देशों की साझा धार्मिक, भाषायी और पारंपरिक विरासत ने संबंधों को और गहरा किया, जिनमें रामायण सर्किट, बौद्ध स्थलों का पर्यटन, और सांस्कृतिक महोत्सवों का आयोजन प्रमुख रहा। इन प्रयासों से लोगों के बीच आपसी समझ, सहिष्णुता और मैत्री को प्रोत्साहन मिला।

सुरक्षा, संप्रभुता और क्षेत्रीय कूटनीति

सुरक्षा और संप्रभुता के क्षेत्र में भारत–नेपाल संबंधों में संतुलन बनाए रखना हमेशा चुनौतीपूर्ण रहा है। खुली सीमा व्यवस्था जहाँ एक ओर दोनों देशों के नागरिकों को निर्बाध आवाजाही की सुविधा देती है, वहीं दूसरी ओर इसका दुरुपयोग अवैध गतिविधियों और विद्रोही संगठनों द्वारा भी होता रहा है। भारत ने नेपाल की सुरक्षा क्षमताओं को मजबूत करने के लिए सैन्य प्रशिक्षण, हथियार आपूर्ति और खुफिया सहयोग प्रदान किया, परंतु नेपाल में समय–समय पर इसे संप्रभुता पर हस्तक्षेप के रूप में देखा गया। 1990–2005 के बीच भारत ने यह स्पष्ट किया कि वह नेपाल की स्वतंत्रता और राजनीतिक इच्छाओं का सम्मान करता है, किंतु अपने राष्ट्रीय हितों की सुरक्षा भी आवश्यक है। क्षेत्रीय कूटनीति के स्तर पर दोनों देशों ने एक–दूसरे के साथ सामंजस्य बनाए रखने का प्रयास किया, विशेषकर माओवादी आंदोलन, सीमा विवाद, और चीन की बढ़ती उपस्थिति जैसे मुद्दों पर रणनीतिक संवाद बनाए रखा गया।

SAARC और बहुपक्षीय मंचों पर सहयोग

दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संघ (SAARC) के माध्यम से भारत और नेपाल ने बहुपक्षीय सहयोग को बढ़ावा देने का प्रयास किया, जहाँ भारत एक अग्रणी सदस्य रहा और नेपाल ने इसकी सचिवालय की मेजबानी की। 1990–2005 की अवधि में SAARC के मंच पर शिक्षा, स्वास्थ्य, जलवायु परिवर्तन, और गरीबी उन्मूलन जैसे क्षेत्रों में साझा परियोजनाओं पर सहमति बनी। भारत ने नेपाल की ऊर्जा, कृषि और जल संसाधनों से जुड़ी क्षेत्रीय योजनाओं में सहभागिता को प्रोत्साहित किया, जबकि नेपाल ने SAARC में छोटे देशों की आवाज को मजबूती देने का प्रयास किया। इसके अतिरिक्त BIMSTEC और संयुक्त राष्ट्र मंचों पर भी भारत और नेपाल ने परस्पर सहयोग और क्षेत्रीय समन्वय को बढ़ावा दिया, जिससे न केवल द्विपक्षीय संबंध बल्कि पूरे दक्षिण एशिया की स्थिरता एवं विकास की दिशा में ठोस पहल हुई।

निष्कर्ष

भारत–नेपाल संबंधों की 1990 से 2005 तक की अवधि एक बहुआयामी और परिवर्तनशील दौर रही, जिसमें लोकतांत्रिक परिवर्तन, माओवादी आंदोलन, सीमा विवाद और क्षेत्रीय कूटनीति जैसे अनेक पहलुओं ने इन द्विपक्षीय रिश्तों को गहराई और जटिलता प्रदान की। नेपाल में लोकतंत्र की बहाली में भारत की सक्रिय भूमिका ने दोनों देशों के बीच राजनीतिक विश्वास को मजबूती दी, वहीं माओवादी विद्रोह ने सुरक्षा और आंतरिक स्थिरता को लेकर नई रणनीतिक चुनौतियाँ उत्पन्न कीं। सीमा विवादोंकृविशेष रूप से कालापानी और सुस्ताकृने भू–राजनीतिक असहमतियों को जन्म दिया, किन्तु शांतिपूर्ण समाधान की दिशा में कूटनीतिक संवाद भी सतत चलता रहा। इसके साथ ही व्यापार, सांस्कृतिक आदान–प्रदान, शिक्षा, स्वास्थ्य और बहुपक्षीय मंचों पर सहयोग ने संबंधों को व्यापक जनसमर्थन और सामाजिक आधार प्रदान किया। भारत और नेपाल की भौगोलिक निकटता, सांस्कृतिक एकता और ऐतिहासिक संबंध इन रिश्तों को सिर्फ रणनीतिक ही नहीं बल्कि मानवीय दृष्टि से भी विशेष बनाते हैं।

संदर्भ

1. संजय उपाध्याय, नेपाल में लोकतंत्र और माओवादी संकट, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006, पृष्ठ 43।
2. सतीश कुमार, भारत और नेपाल : एक बदलते संबंध, एशिया पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2005, पृष्ठ 102।
3. आनंद स्वरूप वर्मा, नेपाल में लोकतांत्रिक आंदोलन और भारत की भूमिका, जनचेतना प्रकाशन, पटना, 2004, पृष्ठ 78।
4. ए. पी. राणा, हिमालयरू रणनीतिक आयाम, मानस पब्लिकेशन, दिल्ली, 1999, पृष्ठ 56।
5. शिव शरण शर्मा, भारत–नेपाल संबंधों का सामाजिक आयाम, भारतविद्या भवन, वाराणसी, 2003, पृष्ठ 112।
6. बी. सी. उप्रेती, नेपाल में पहचान की राजनीति और राष्ट्र निर्माण, कालिंगा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2001, पृष्ठ 145।
7. रमेश चौहान, भारत की पड़ोसी नीति, नीति प्रकाशन, जयपुर, 2005, पृष्ठ 91।
8. लोकराज बराल, नेपाल : राजनीतिक दल और संसद, एड्रॉइट पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2004, पृष्ठ 188।
9. श्रीकांत सिंह, नेपाल के लोकतांत्रिक संक्रमण में भारत की भूमिका, हिमालयन अफेयर्स, खंड 4, अंक 2, 2003, पृष्ठ 35–47।

10. भारत सरकार, विदेश मंत्रालय, भारत–नेपाल संबंध : पृष्ठभूमि दस्तावेज, सरकारी प्रकाशन, 2005।

11. इंटरनेशनल क्राइसिस ग्रुप (ICG), नेपाल के माओवादी : उनके उद्देश्य, संरचना और रणनीति, एशिया रिपोर्ट संख्या 104, अक्टूबर 2004।

12. दीपक ज्ञवाली, नए नेपाल में जल और शक्ति, हिमाल बुक्स, काठमांडू, 2005, पृष्ठ 72।

13. हरि वंश झा, भारत–नेपाल संबंध : समस्याएँ और संभावनाएँ, साउथ एशिया बुक्स, नई दिल्ली, 2000, पृष्ठ 94।